पाठ - एक कहानी यह भी

शब्दार्थ

1. **सिलसिला** – एक के बाद एक चलते रहने वाला क्रम, क्रमिकता, श्रेणी, पंक्ति, कतार
2. **साम्राज्य** – एक विशाल राज्य जिसके अधीन अनेक छोटे – छोटे राज्य या देश हों, सार्वभौम राज्य, सल्तनत
3. **निहायत** – अत्यंत, बहुत अधिक, ज़्यादा, हद, सीमा
4. **अव्यवस्थित** – असहज, जो ठीक क्रम से न हो, बेतरतीब
5. **डिक्टेशन** – श्रुतलेख, सुनकर लिखा जाने वाला लेख, इमला, अनुलेखन
6. **सदैव तत्पर** – आज्ञाकारी, आतुर, उतावला, उत्साही, इच्छुक
7. **प्रतिष्ठा** – मान – मर्यादा, सम्मान, इज़्ज़त
8. **ओहदों** – पद, पदवी
9. **दरियादिली** – सज्जनता, नेकी, सहृदयता, अति उदारता, दान देने की प्रवृत्ति, दयालुता
10. **अहंवादी** – स्वयं को दूसरों से बदकर समझने वाला, अहंमन्य, घमंडी
11. **भग्नावशेष** – मलबा, अवशेष
12. **हौसला** – उत्साह, साहस, हिम्मत
13. **शब्दकोश** – शब्दों के वर्ण विन्यास, अर्थ, प्रयोग, व्युत्पत्ति तथा पर्याय आदि से संबंधित ग्रंथ
14. **विषयवार** – विषय अनुसार
15. **यश** – प्रशंसा, बड़ाई, कीर्ति, नाम, सुख्याति
16. **सकारात्मक** – निश्चित और स्थिर स्वरूप वाला, निश्चयी, (पॉजिटिव), उपयोगी
17. **सिकुड़ना** – आकुंचित होना, सिमटना, आकार में छोटा हो जाना, शिकन, सिलवट पड़ना
18. **विस्फारित** – फैलाया हुआ, फाड़ा हुआ, खोला हुआ
19. **अहं** – स्वयं की सत्ता, औरों से भिन्न अपनी पृथक सत्ता का भान, अहंकार, घमंड, अहम्मन्यता
20. **अनुमति** – किसी कार्य को करने की इजाज़त, स्वीकृति, (एस्सेंट), अनुज्ञा, (परमिशन)
21. **विवशता** – चाहकर भी किसी काम को न कर पाने की स्थिति, विवश होने की अवस्था या भाव, लाचारी
22. **भागीदार** – भाग या हिस्सा प्राप्त करने वाला व्यक्ति, हिस्सेदार, साझेदार, हकदार
23. **महत्वाकांक्षाएँ** – उन्नति को प्राप्त करने की इच्छा, बड़ा बनने की आकांक्षा, सपना, तमन्ना, अरमान, कामना
24. **हाशिए** – अंतिम किनारा, आख़िरी छोर, कोर
25. **सरकना** – खिसकना, रेंगना, ज़मीन से सटे हुए आगे बढ़ना, धँसना, फिसलना, हट जाना
26. **यातना** – बहुत अधिक शारीरिक या मानसिक कष्ट, तकलीफ़, पीड़ा, व्यथा
27. **विश्वासघात** – छल, धोखा, विश्वास को तोड़ना, किसी के विश्वास के विरुद्ध किया गया काम, दगाबाज़ी
28. **आँख मूँदकर** – आँख बंद करके
29. **शक्की** – शक करने वाला, शंकाशील, संदेह करने वाला

egyanarchive

30.**चपेट** – लपेट, घेरा, धक्का, झोंका, प्रहार, आघात, टक्कर, कठिनाई या संकट की स्थिति

31.**पितृ – गाथा** – पिता की प्रशंसा

32.**गौरव** – सम्मान, आदर, इज़्ज़त, प्रतिष्ठा, मर्यादा, महिमा, गरिमा, महानता, बड़प्पन

33.**खूबी** – अच्छाई, अच्छापन, विशेषता

34.**खामियाँ** – कमियाँ, बुराइयाँ

35.**ग्रंथि** – शरीर में गाँठ के रूप में होने वाला वह अवयव जो शरीर के लिए उपयोगी रस उत्पन्न करता है

36.**लेखकीय** – लेखक संबंधी

37.**उपलब्धि** – उपलब्धता, प्राप्ति, महत्वपूर्ण सफलता, अनुभव, प्रत्यक्ष ज्ञान

38.**संकोच** – झिझक, हिचकिचाहट, असमंजस, भय या लज्जा का भाव

39.**अचेतन** – बेहोश, बेसुध, निर्जीव, अज्ञानी, चेतना – रहित

40.**खंडित** – जिसे तोड़ा गया हो, जो कई जगह से टूटा हुआ हो

41.**व्यथा** – मानसिक या शारीरिक क्लेश, पीड़ा, वेदना, चिंता, कष्ट

42.**झलक** – आकृति का आभास या प्रतिबिंब

43.**उपजा** – उत्पन्न, पैदा

44.**शक** – संदेह, संशय, शंका, भ्रांति होना या पड़ना

45.**कुंठा** – निराशाजन्य अतृप्त भावना, (फ़्रस्ट्रेशन)

46.**प्रतिक्रिया** – किसी कार्य या घटना के परिणाम – स्वरूप होने वाला कार्य, (रिएक्शन)

47.**प्रतिच्छाया** – चित्र, तस्वीर, प्रतिरूप, परछाईं, प्रतिबिंब, प्रतिमा

48.**परंपरा** – प्राचीन समय से चली आ रही रीति, परिपाटी, (ट्रैडिशन)

49.**आसन्न** – निकट या नज़दीक आया हुआ, समीपस्थ, उपस्थित

50.**प्रवाह** – बहाव, बहने की क्रिया या भाव, धार, धारा

51.**विपरीत** – जैसा होना चाहिए उससे उलटा, विरुद्ध, प्रतिकूल, ख़िलाफ़, विपरीत क्रम, भिन्न

52.**धैर्य** – शांति, सब्र

53.**सहनशक्ति** – सहने की शक्ति या सामर्थ्य

54.**ज़्यादती** – ज़ुल्म, ज़बरदस्ती, अत्याचार, कठोर व्यवहार

55.**प्राप्य** – जो कहीं से या किसी से प्राप्त हो सकता हो, प्राप्त करने के योग्य, जो मिल सके, मिलने के योग्य

56.**फ़रमाइश** – किसी बात या काम को करने का आग्रह, निवेदन, आज्ञा के रूप में कुछ माँगना, (ऑर्डर), अनुरोध के साथ की गई माँग

57.**ज़िद** – किसी बात पर अड़े रहने का भाव, हठ, किसी अनुचित बात के लिए किया जाने वाला दुराग्रह, अड़, दृढ़ता

58.**सहज** – सरल, सुगम, स्वाभाविक, सामान्य, साधारण

egyanarchive

59.**लगाव** – शायद सहानुभूति से उपजा

60.**निहायत** – अत्यंत, बहुत अधिक, ज़्यादा, हद, सीमा

61.**असहाय** – जिसकी कोई सहायता करने वाला न हो, मजबूर, निराश्रय, अनाथ

62.**सहिष्णुता** – सहिष्णु होने की अवस्था, गुण या भाव, सहनशीलता, क्षमाशीलता

63.**पैतृक** – पिता संबंधी, पुरखों का, पुश्तैनी

64.**पुराण** – प्राचीन घटना या उसका वृत्तांत, बहुत पुराना होने के कारण जीर्ण – शीर्ण

65.**धुँधली** – अँधेरा, अस्पष्ट, नज़र की कमी या दोष

66.**आँगन** – मकान की सीमा में आने वाला वह खुला स्थान जिसे घर के कामों के लिए उपयोग में लाया जाता है

67.**सतोलिया** – सतोलिया खेल को खेलने के लिए सात चपटे पत्थर ढूँढ़ने पड़ते हैं जिन्हें एक के ऊपर एक जमाया जाता है। सबसे बड़ा पत्थर नीचे और फिर ऊपर की तरफ छोटे होते हुए पत्थर लगाये जाते हैं

68.**दायरा** – अधिकार या कर्म का क्षेत्र

69.**पाबंदी** – पाबंद होने की क्रिया, भाव या अवस्था, किसी नियम, वचन, सिद्धांत आदि का पूर्ण रूप से पालन करने की विवशता या लाचारी, किसी के अधीन होकर काम करने का भाव

70.**शिद्दत** – प्रबलता, तीव्रता, लगन, तीव्र भावना, गरमजोशी

71.**आधुनिक** – वर्तमान समय या युग का, समकालीन, सांप्रतिक, हाल का

72.**परंपरागत** – परंपरा से प्राप्त होने वाला, परंपरा से संबद्ध, पीढ़ी दर पीढ़ी होने वाला

73.**विच्छिन्न** – जिसका विच्छेद हुआ हो, काटकर या छेदकर अलग किया हुआ, पृथक, विभाजित, छिन्न – भिन्न, समाप्त

74.**संकुचित** – संकीर्ण, तंग, सँकरा, अनुदार

75.**आरंभिक** – शुरुआती, शुरू का, आरंभ का, प्रारंभिक

76.**पात्र** – उपन्यास, कहानी, नाटक आदि में वे व्यक्ति जो कथा – वस्तु की घटनाओं के घटक होते हैं और जिनके क्रिया-कलाप या चरित्र से कथावस्तु की सृष्टि और उसका परिपाक होता है, अभिनेता

77.**किशोरावस्था** – बारह से अठारह वर्ष तक की आयु

78.**युवावस्था** – जवानी, यौवन, तरुण अवस्था

79.**अहसास** – अनुभव, प्रतीति, संवेदन, ध्यान, ख़याल

80.**अंतराल** – फ़ासला, दूरी, लंबाई, विस्तार

81.**भाव-भंगिमा** – कला पूर्ण शारीरिक मुद्रा, स्त्रियों के हाव-भाव या कोमल चेष्टाएँ, कुटिलता, वक्रता

82.**व्यक्तित्व** – अलग सत्ता, पृथक अस्तित्व, निजी विशेषता, वैयक्तिकता

83.**अभिव्यक्ति** – प्रकटीकरण, स्पष्टीकरण, परोक्ष और सूक्ष्म कारणों का प्रत्यक्ष कार्य के रूप में सामने आना

84.**आश्चर्य** – विस्मय, अद्भुत रस का स्थायी भाव, अचरज, अचंभा, हैरानी

85.**अनिवार्य** – जिसके बिना काम न चल सके, नितांत आवश्यक, (कंपल्सरी), अवश्यंभावी

egyanarchive

86.**योग्यता** – गुण, क्षमता, औकात, बुद्धिमानी, प्रतिष्ठा

87.**मैट्रिक** – हाईस्कूल, दसवीं, प्रवेशिका

88.**छत्र** – छाया

प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1. लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का किस रूप में प्रभाव पड़ा?

उत्तर:

लेखिका के व्यक्तित्व पर मुख्य रूप से दो व्यक्तियों का प्रभाव पड़ा, वे थे, लेखिका के पिताजी और लेखिका की हिन्दी की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल। पिताजी ने लेखिका को राजनैतिक बहसों में शामिल करके देश और समाज के प्रति जागरूक बनाया। इसके साथ ही उन्होंने उसे रसोईघर और सामान्य घर-गृहस्थी के कामों से दूर रखकर प्रतिभाशाली व्यक्तित्व प्रदान किया।

हिन्दी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने लेखिका को क्रियाशील, जागरूक और आन्दोलनकारी बनाने में अपनी अहम् भूमिका निभायी। उन्होंने अपनी जोशीली बातों से लेखिका के मन में बैठे संस्कारों को कार्य-रूप दे दिया। इसके साथ ही उन्होंने लेखिका को क्रान्तिकारी और विद्रोही बनाया।

प्रश्न 2. इस आत्मकथा में लेखिका के पिता ने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर क्यों सम्बोधित किया है?

उत्तर:

इस आत्मकथा में लेखिका के पिता ने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर इसलिए सम्बोधित किया है, क्योंकि भटियारखाने में खाना-पकाना चलता रहता है। रसोईघर में व्यस्त रहने वाली लडकियों: व्यस्त रहने वाली लड़कियों की प्रतिभा व्यर्थ नष्ट हो जाती है। इसलिए लेखिका के पिता अपने बच्चों को घर-गृहस्थी या चूल्हे-चौके तक सीमित नहीं रखना चाहते थे, बल्कि वे उन्हें चूल्हे-चौके के काम से हटाकर जागरूक नागरिक बनाना चाहते थे। अतः उन्होंने रसोईघर की उपेक्षा करते हुए उसे 'भटियारखाना' सम्बोधित किया है।

प्रश्न 3. वह कौन सी घटना थी जिसके बारे में सुनने पर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर?

उत्तर: एक बार कॉलेज की प्रिंसिपल ने लेखिका के पिता को पत्र लिखकर कॉलेज में बुलाया। पिता को लगा कि उनकी पुत्री ने कॉलेज में अवश्य कोई गम्भीर शरारत की होगी। अतः पत्र पढ़कर वे भड़क उठे, क्योंकि वे पहले से ही लेखिका के विद्रोही रुख से परेशान रहते थे। उन्हें लगा कि इस लड़की के कारण उन्हें सिर झुकाना पड़ेगा। इसलिए वे बड़बड़ाते हुए कालेज गए। जब वे कॉलेज पहुँचे तब उन्हें पता चला कि उनकी लड़की तो सब लड़कियों की चहेती नेत्री है।

egyanarchive

वे प्रिंसिपल की बात न मानकर उसकी ही बात मानती हैं और उसके कहने पर सब लड़कियाँ क्लास छोड़कर मैदान में आ जाती हैं। इसलिए प्रिंसिपल का कॉलेज चलाना मुश्किल हो गया है। यह सुनकर पिता का सीना गर्व से फूल गया और वे यह सुनकर गदगद हो गये। उन्होंने प्रिंसिपल को उत्तर में यही कहा कि "ये आन्दोलन तो वक्त की पुकार है - इन्हें कैसे रोका जा सकता है?" जब लेखिका की माँ ने पिता की कही बात लेखिका को बताई तब वह यह सुनकर अवाक् रह गयी। उस समय न उसको अपनी आँखों पर विश्वास हो रहा था और न अपने कानों पर, यह हकीकत थी।

प्रश्न 4. लेखिका की अपने पिता से वैचारिक टकराहट को अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

'एक कहानी यह भी' पाठ के आधार पर बताइये कि लेखिका के अपने पिता से क्या वैचारिक मतभेद थे?

उत्तर: लेखिका के पिताजी का स्वभाव क्रोधी, शक्की व अहंवादी था। वे लेखिका को देश-समाज के प्रति जागरूक बनाना चाहते थे लेकिन वे उसे घर की चारदीवारी तक ही सीमित रखना चाहते थे। लेखिका को पिता की यह सीमा स्वीकार नहीं थी, वह सक्रिय रूप से आन्दोलनों में भाग लेना चाहती थी। लेखिका ने पिता की इच्छा के विरुद्ध विवाह किया था। इससे लेखिका की उनसे वैचारिक टकराहट थी।

प्रश्न 5. इस आत्मकथ्य के आधार पर स्वाधीनता आन्दोलन के परिदृश्य का चित्रण करते हुए उसमें मन्नूजी की भूमिका को रेखांकित कीजिए।

उत्तर: सन् 1942 से 1947 तक का समय स्वतन्त्रता आन्दोलन का समय था। इस काल में पूरे देश में देश-भक्ति की भावना अपने पूरे जोश के साथ बह रही थी। जगह-जगह पर आन्दोलन हो रहे थे। जुलूस और प्रभात फेरियाँ निकाली जा रही थीं। स्कूल और कॉलेजों के विद्यार्थी अपनी-अपनी कक्षाओं को छोड़कर जुलूसों और प्रभात फेरियों में शामिल हो रहे थे। ऐसे देश-भक्ति के वातावरण में मन्नू भण्डारी भी अपना उत्साह और जोश दिखाने में पीछे नहीं रहीं।
उन्होंने अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध जुलूसों और प्रभात फेरियों में खुल कर भाग ही नहीं, लिया बल्कि अपने सहपाठियों और सहयोगियों को भी भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। लड़कों के बीच उन्होंने खुलकर नारे बाजी की और भाषण दिए। इतना ही नहीं, उनके इशारे पर पूरी कॉलेज की छात्राएँ आन्दोलन में भाग लेने हेतु सक्रिय हो गयीं। इस प्रकार इन आन्दोलनों में मन्नू की भूमिका एक सक्रिय स्वतन्त्रता सेनानी की ही रही। रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 6. लेखिका ने बचपन में अपने भाइयों के साथ गिल्ली-डण्डा तथा पतंग उड़ाने जैसे खेल भी खेले, किन्तु लड़की होने के कारण उनका दायरा घर की चारदीवारी तक सीमित था। क्या आज की लड़कियों के लिए स्थितियाँ ऐसी ही हैं या बदल गयी हैं? अपने परिवेश के आधार पर लिखिए।

उत्तर: लेखिका ने तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार अपने भाई-बहनों के साथ गुल्ली-डण्डा खेलने तथा पतंग उड़ाने के खेल अपने घर की सीमा के अन्दर ही खेले, लेकिन उस जमाने में घर की दीवारें केवल अपने घर तक ही सीमित नहीं थीं बल्कि एक दृष्टि से पूरे मोहल्ले तक फैली हुई थीं। उस समय किसी के घर जाने में किसी भी प्रकार की पाबन्दी नहीं थी।

उस समय के लोगों की सोच बड़ी थी और अपने मन का भाव उनके विशाल हृदयों में समाया हुआ था। आज लड़कियों के लिए स्थितियों में पूरी तरह बदलाव आ गया है।
लड़कियों को खेलने और घूमने की स्वतन्त्रता सीमा से अधिक मिल गयी है। इसी आधार पर जिला व राज्य और देश स्तर पर भी खेलने जाती हैं। घूमने में भी उनकी यही स्थिति है। लेकिन वर्तमान टी.वी. संस्कृति का प्रभाव इतना प्रभावी हो रहा है कि अपनत्व और विश्वास की भावना समाप्त-सी हो रही है। इसलिए हर माता-पिता की लड़कियों के बारे में सोच सजग हो गयी है। अब उनके लिए पड़ोसी परिवारजन-सा नहीं रह गया है। इस आधार पर घर में ही टी.वी: देखना और अपने भाइयों-बहनों के साथ खेलना लड़कियों की नियति बन गयी है।

प्रश्न 7. मनुष्य के जीवन में आस-पड़ोस का बहुत महत्व होता है। परन्तु महानगरों में रहने वाले लोग प्रायः 'पड़ोस कल्चर' से वंचित रह जाते हैं। इस बारे में अपने विचार लिखिए।
उत्तर: यह सत्य है कि मनुष्य के जीवन में आस-पड़ोस का बहुत महत्व होता है, क्योंकि सुख-दु:ख में सबसे पहले आस-पड़ोस के ही लोग काम आते हैं और सहयोगी बनते हैं। लेकिन वर्तमान में पाश्चात्य सभ्यता और टी.वी. संस्कृति के प्रभाव ने महानगरों की कल्चर में रहने वाले लोगों को इतना आत्मकेन्द्रित बना दिया है कि वे आस-पड़ोस के जीवन से मानो बेगाने हो गये हैं। धन कमाने की लालसा उनके मन में इतनी बढ़ गयी है कि उन्हें यही पता नहीं चलता कि उनके पड़ोस में कौन रहता है? सम्पर्क की बात तो अलग रह जाती है। इसलिए वे 'पड़ोस कल्चर' से वंचित रह जाते हैं।

प्रश्न 8. लेखिका द्वारा पढ़े गए उपन्यासों की सूची बनाइए और उन उपन्यासों को अपने पुस्तकालय में खोजिए।
उत्तर: लेखिका द्वारा पढ़े गये उपन्यासों में 'त्याग-पत्र', 'सुनीता' (जैनेन्द्र जी), 'शेखर: एक जीवनी' (अज्ञेय जी), 'चित्रलेखा' (भगवतीचरण वर्मा) आदि हैं। इसके साथ ही लेखिका ने शरत, प्रेमचन्द, यशपाल आदि के साहित्य को भी पढ़ा।

egyanarchive

प्रश्न 9. आप भी अपने दैनिक अनुभवों को डायरी में लिखिए।
उत्तर:
छात्र अपने दैनिक अनुभवों को डायरी में स्वयं लिखें।
आज का अनुभव - 14 अप्रैल .....
आज का दिन कुछ खास था। सुबह जल्दी उठकर चाय बनाई और खिड़की से बाहर देखा। मौसम बिल्कुल सुहावना था, हल्की सी ठंडक और ठंडी हवा चल रही थी। सुबह का समय हमेशा सुकून देने वाला होता है, और आज तो जैसे सब कुछ और भी शांत था। सोचा, क्यों न आज कुछ नया किया जाए?
तय किया कि आज के दिन कुछ समय खुद को ही दूँगा। सबसे पहले, अपने पसंदीदा किताब के कुछ पन्ने पलटे। यह एक छोटी सी आदत है, जो मेरे दिन की शुरुआत को हमेशा खास बना देती है। किताब में जो विचार थे, वो मुझे काफी प्रेरित करने वाले थे, और मैं कुछ देर के लिए उन विचारों में खो गया।

फिर, दोपहर में कुछ समय बाहर निकलने का मन किया। पार्क में चला गया। हवा में ताजगी थी, लोग अपने काम में व्यस्त थे, कुछ लोग दौड़ रहे थे, तो कुछ लोग शांति से बैठकर अपनी सोच में खोए हुए थे। इस शांत वातावरण ने मुझे एक नई ऊर्जा दी, और अब मुझे एहसास हुआ कि छोटे-छोटे पल ही जीवन के सबसे महत्वपूर्ण होते हैं।

पार्क में कुछ देर टहलने के बाद, मैंने सोचा कि मुझे कुछ कामों में रुकावट आ रही है, जिन्हें मुझे सुलझाना है। इस पर मैंने अपने दिन के बाकी हिस्से को व्यवस्थित करने का फैसला किया। अब मुझे यह समझ में आ गया कि खुद को समय देना और अपनी प्राथमिकताओं को सही ढंग से समझना कितना ज़रूरी है।

दिन का अंत कुछ खास विचारों के साथ हुआ। मुझे एहसास हुआ कि हमारी जिंदगी के हर पल में कुछ न कुछ खास होता है, जो हमें महसूस करने के लिए वक्त निकालना चाहिए। किसी दिन ऐसा नहीं होता, जब हम कुछ नया सीखते न हों, और ये छोटी-छोटी बातें हमें खुद के और अपने आसपास के लोगों के बारे में और अधिक समझने का मौका देती हैं।

कुल मिलाकर, आज का दिन आत्म-समीक्षा और प्रेरणा से भरा था।

भाषा अध्ययन प्रश्न

प्रश्न - इस आत्मकथ्य में मुहावरों का प्रयोग करके लेखिका ने रचना को रोचक बनाया है। रेखांकित मुहावरों को ध्यान में रखकर कुछ और वाक्य बनाएँ

(क) इस बीच पिताजी के एक निहायत दकियानूसी मित्र ने घर आकर अच्छी तरह पिताजी की लू उतारी।

(ख) वे तो आग लगाकर चले गए और पिताजी सारे दिन भभकते रहे।

(ग) बस अब यही रह गया है कि लोग घर आकर थू-थू करके चले जाएँ।

(घ) पत्र पढ़ते ही पिताजी आग-बबूला हो गये।

उत्तर:

(क) घर चलो, देखो मैं कैसे तुम्हारी लू उतारता हूँ।

(ख) मेरे घर पहुंचने से पूर्व ही मेरा मित्र मेरे विरुद्ध आग लगा चुका था।

(ग) जब लोगों ने उसके दुराचार की बात सुनी तो वे थू-थू करने लगे।

(घ) परीक्षा परिणाम-पत्रक देखते ही पिताजी आग-बबूला हो गये।

egyanarchive